चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6-1-26	4	3-8

सम्मेलन • हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का दो दिवसीय 49वां सम्मेलन हुआ शुरू

कृषि अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि सभ्यता की पहचान भी : डॉ. मिड्ढा

भास्कर न्यूज़ | हिसार

कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। यह बात विस डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्णलाल मिड्ढा ने हकृवि में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के 49वें सम्मेलन में कही।

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसो. आईएयूए के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अध्यक्षता की। विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्णलाल मिड्ढा ने कहा यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने और देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने और खाधान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विवि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिह्नित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा है।

सम्मेलन में कुलपतियों के साथ मुख्य अतिथि डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा।

एनईपी के तहत विद्यार्थियों का होगा कौशल विकास

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं, जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50% प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ-साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान : प्रो. बीआर काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान और सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी। आईएयूए 1967 से कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन हो रहा है। कृषि में नए आयाम के तहत स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि, फसल विविधीकरण, दलहन, तिलहन और मोटे अनाज और कृषि उद्योग एवं मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देनी होगी। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	6-1-26	2	5-8

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी: डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

हकृवि में कुलपतियों के 49 वें सम्मेलन का शुभारंभ

कुलपतियों के साथ मुख्य अतिथि डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा।

हिसार, 5 जनवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं जी.बी.पी.यू.ए.टी. पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ौतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं, जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। डिप्टी स्पीकर ने धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन, मत्स्य पालन सहित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे कुलपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र को गति देने एवं भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास: डा. मनमोहन सिंह

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जी.बी.पी.यू.ए.टी. पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं, जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है।

उन्होंने दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखें जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान: प्रो. काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी, जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।

उन्होंने इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1967 से यह एसोसिएशन कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन करने के साथ-साथ कृषि शिक्षा में बदलती जरूरतों के हिसाब से अपने आप को इस तरह तैयार करते हैं ताकि वे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

उन्होंने कहा कि कृषि में नए आयाम के तहत स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि, फसल विविधीकरण, दलहन, तिलहन और मोटे अनाज तथा कृषि उद्योग एवं मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देनी होगी। भविष्य में कृषि के योगदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किसानों को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने की दिशा में एकजुट होकर काम करना होगा। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	6.1.26	4	1-3

कृषि हमारी सभ्यता की पहचान, केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं : मिड्ढा

हकृवि में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का डिप्टी स्पीकर ने किया शुभारंभ

हिसार, 5 जनवरी (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में सोमवार को कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सम्मेलन की अध्यक्षता हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ ही नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन सभ्यता और सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक है। उन्होंने विश्वास जताया कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार सेवाओं और नवाचार को नई दिशा देगा। डॉ. मिड्ढा ने सतत कृषि को अपनाने, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि से जोड़ने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने स्थापना के बाद 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित कर देश के कृषि उत्पादन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। हकृवि एशिया के अग्रणी कृषि विश्वविद्यालयों में शामिल है।

हिसार में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य। -हप्र

इस अवसर पर आईएयूए के अध्यक्ष एवं पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, घटती कृषि जोत और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए सभी कृषि विश्वविद्यालयों को आपसी सहयोग और समन्वय के साथ कार्य करना होगा। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को सफलतापूर्वक लागू कर रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि दो दिवसीय सम्मेलन में 'खेत से भविष्य तकः कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण', विकसित भारत 2047 में कृषि संस्थानों की भूमिका तथा सतत कृषि के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का समन्वय जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन मंथन किया जाएगा, जिससे देश की कृषि नीति को दिशा मिलेगी।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	6-1-26	5	6-8

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी : डॉ. कृष्ण लाल

हिसार, 5 जनवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोडने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाधान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फ़सलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है।

स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन करते मुख्यातिथि व अन्य।

हकृवि में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारम्भ

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉं मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। उन्होंने दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखें जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	6-1-26	2	1-4

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का दो दिवसीय 49वां सम्मेलन सोमवार से शुरू हो गया। कुलपतियों ने एकत्रित होकर कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047 में कृषि संस्थानों की भूमिका, कृषि के भविष्य के लिए नई प्रौद्योगिकी आदि विषयों पर गहन चर्चा की। कार्यक्रम में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डा. मनमोहन सिंह बतौर विशिष्ट पहुंचे। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं। जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ-साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है।

स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलाग का विमोचन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य। • विज्ञप्ति।

कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान : प्रो. बीआर काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक : कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047 : कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना आदि विषयों पर गहन चर्चा की। जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आइएयूए) का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1967 से यह एसोसिएशन कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है। जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन करने के साथ-साथ कृषि शिक्षा में बदलती जरूरतों के हिसाब से अपने आप को इस तरह तैयार करते हैं ताकि वे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि कृषि में नए आयाम के तहत स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि, फसल विविधीकरण, दलहन, तिलहन और मोटे अनाज तथा कृषि उद्योग एवं मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देनी होगी। भविष्य में कृषि के योगदान के महत्व के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किसानों को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने की दिशा में एकजुट होकर काम करना होगा।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय		
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	6-1-25	9	2-6

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारंभ

देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका : डॉ. मिड्ढा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा है कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। कृष्णलाल मिड्ढा सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शुरू हुए कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के 49वें सम्मेलन मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रहे जबकि हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

हिसार। स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य।

विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है।

कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान : प्रो. काम्बोज

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6-1-26	2	1-4

अमर उजाला

सम्मेलन

एचएयू में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने किया उद्घाटन

कृषि में नवीनतम तकनीकों के उपयोग व युवाओं की भागीदारी पर जोर

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार एचएयू में दो दिवसीय आयोजित कुलपतियों के सम्मेलन में कृषि में नए आयामों की खोज, भविष्य में कृषि का योगदान और स्वरूप विषय पर मंथन करते देशभर से आए कुलपति। संवाद

हिसार। विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति की पहचान भी है। उन्होंने सतत कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में सोमवार को कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के 49वें सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा कि देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने और खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विश्वविद्यालय न केवल किसानों को नवीनतम तकनीक और उन्नत किस्मों के बीज उपलब्ध कराते हैं बल्कि कृषि के उज्ज्वल भविष्य के लिए कुशल विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने किसानों को धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन और मत्स्य पालन योजनाओं को अपनाने के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया।

उन्होंने एचएयू की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि एशिया के प्रमुख कृषि विश्वविद्यालयों में एचएयू का विशिष्ट स्थान है। विश्वविद्यालय ने स्थापना के बाद अब तक 305 से अधिक फसलों की उन्नत किस्में विकसित कर देश के खाद्यान्न उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पिछले पांच वर्षों में ही 50 से अधिक किस्में विकसित और चिह्नित की गई हैं। इस अवसर पर उन्होंने स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन भी किया।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण और विकसित भारत 2047 में कृषि संस्थानों की भूमिका जैसे विषयों पर चर्चा होगी। उन्होंने मोटे अनाज तथा कृषि उद्योग व मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देने की आवश्यकता बताई।

किसानों को धान की सीधी बिजाई और फसल अवशेष प्रबंधन अपनाने के लिए प्रेरित किया

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, घटती जोत और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए सभी कृषि विश्वविद्यालयों को मिलकर कार्य करना होगा।

आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। मंच संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा न्यूज	05.01.2026	--	--

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान है: डॉ. मिड्ढा

महेंद्र गोयल, हरियाणा मेल

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	05.01.2026	--	--

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारंभ

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी : डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 6 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे कुलपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र को गति देने एवं भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। उन्होंने सम्मेलन में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन भी किया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास - डॉ मनमोहन सिंह

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। उन्होंने दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखें जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसानः प्रो. बीआर काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तकः कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047ः कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1967 से यह एसोसिएशन कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन करने के साथ-साथ कृषि शिक्षा में बदलती जरूरतों के हिसाब से अपने आप को इस तरह तैयार करते हैं ताकि वे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	05.01.2026	--	--

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है : डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

नभ-छोर न्यूज ▶▶ 05 जनवरी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	06.01.2026	--	--

हकृवि में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारंभ, डिप्टी स्पीकर मिड्डा रहे मुख्यातिथि

कृषि केवल अर्थव्यवस्था नहीं, भारतीय सभ्यता की पहचान: डॉ. कृष्ण लाल मिड्डा

हिसार (सच कहूँ/मुकेश)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन रविवार को शुरू हुआ। सम्मेलन का शुभारंभ हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्डा ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह विशिष्ट अतिथि रहे, जबकि हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

डॉ. कृष्ण लाल मिड्डा ने कहा कि भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को आधुनिक तकनीक, उन्नत बीज और वैज्ञानिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के साथ-साथ कृषि क्षेत्र के लिए दक्ष मानव संसाधन तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण साबित होगा।

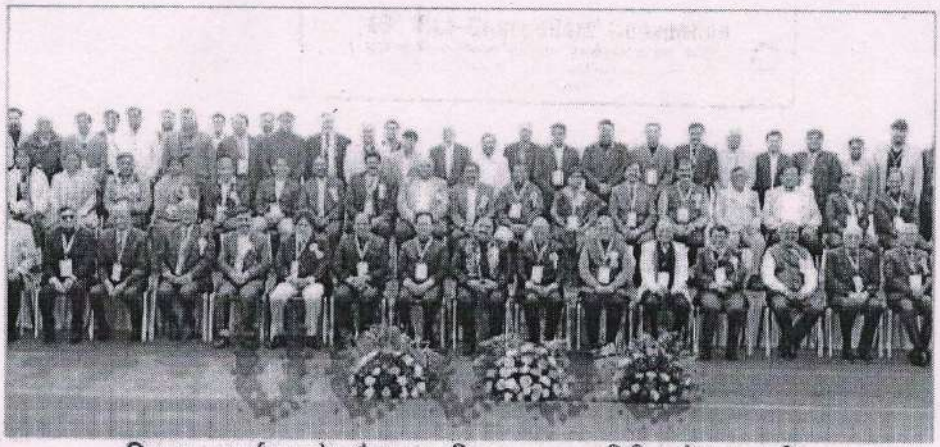

हिसार। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित मुख्य अतिथि और कुलपति।

आईएयूए के अध्यक्ष डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत विद्यार्थियों के ज्ञान के साथ-साथ कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि दो दिवसीय सम्मेलन में विकसित भारत-2047 में कृषि संस्थानों की भूमिका, सतत कृषि और नवाचार जैसे विषयों पर मंथन किया जाएगा। उन्होंने किसानों को कृषि को उद्यमिता के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग न्यूज	05.01.2026	--	--

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी: डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

हिसार 5 जनवरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। डिप्टी स्पीकर ने धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन, मत्स्य पालन सहित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे कुलपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र को गति देने एवं भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। उन्होंने सम्मेलन में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन भी किया।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास- डॉ मनमोहन सिंह- इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। उन्होंने दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखे जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान: प्रो. बीआर काम्बोज- हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1967 से यह एसोसिएशन कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन करने के साथ-साथ कृषि शिक्षा में बदलती जरूरतों के हिसाब से अपने आप को इस तरह तैयार करते हैं ताकि वे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि कृषि में नए आयाम के तहत स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि, फसल विविधिकरण, दलहन, तिलहन और मोटे अनाज तथा कृषि उद्योग एवं मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देनी होगी। भविष्य में कृषि के योगदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किसानों को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने की दिशा में एकजुट होकर काम करना होगा।

कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	05.01.2026	--	--

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी : डॉ. मिड्ढा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयूए) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

कुलपति सम्मेलन में कुलपतियों के साथ मुख्य अतिथि डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। डिप्टी स्पीकर ने धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन, मत्स्य पालन सहित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मेलन में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन भी किया।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान : प्रो. काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047 कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास : डॉ. मनमोहन

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। उन्होंने सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखे जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	05.01.2026	--	--

भारतीय कृषि केवल अर्थव्यवस्था का आधार नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी : डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

–हकृवि में कुलपतियों के 49वें सम्मेलन का शुभारंभ

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 49वां सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयू) के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि केवल भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार ही नहीं बल्कि हमारी सभ्यता की पहचान भी है। कृषि विश्वविद्यालय किसानों को नवीनतम तकनीक, उन्नत किस्मों के बीज देने के अलावा कृषि क्षेत्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए विद्यार्थियों को भी तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार और नवाचार को नई दिशा देने तथा देश की कृषि प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। उन्होंने सतत् कृषि, नवीनतम तकनीकों के समावेश और युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है। देश के कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने तथा खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करने में कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का एशिया महाद्वीप के कृषि विश्वविद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान है। हकृवि ने अपने गठन के पश्चात 305 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित करके देश के खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने में विशेष योगदान किया है। गत पांच वर्षों के दौरान हकृवि द्वारा 50 से अधिक किस्में विकसित एवं चिन्हित की गई हैं जिनमें गेहूं, सरसों, मूंग, बाजरा तथा चारा फसलों की भी उन्नत किस्में शामिल हैं। डिप्टी स्पीकर ने धान की सीधी बिजाई, फसल अवशेष प्रबंधन, मत्स्य पालन सहित विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे कुलपतियों से आह्वान करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र को गति देने एवं भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। उन्होंने सम्मेलन में स्नातक पाठ्यक्रम के कैटलॉग का विमोचन भी किया।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ होगा कौशल विकास- डॉ मनमोहन सिंह

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी संगठन के अध्यक्ष एवं जीबीपीयूएटी पंतनगर के कुलपति डॉ मनमोहन सिंह ने अपने भाषण में कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं घटती जोत जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2030 को अपना चुके हैं जिसमें विशेष तौर पर विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल एक्टिविटी में समय देकर ज्ञान के साथ साथ उनका कौशल विकास भी किया जा रहा है। उन्होंने दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तकनीकी सत्रों में रखें जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती के लिए कृषि को उद्यमिता के तौर पर अपनाएं किसान- प्रो. बीआर काम्बोज

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में खेत से भविष्य तक: कृषि में नए क्षेत्रों का अन्वेषण, विकसित भारत 2047: कृषि संस्थानों की भूमिका और योगदान तथा सतत कृषि के भविष्य के लिए परंपरा और प्रौद्योगिकी का सेतु बनाना विषयों पर गहन चर्चा की जाएगी जिससे सभी कृषि विश्वविद्यालयों को भविष्य की नीति निर्धारित करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एसोसिएशन (आईएयू) का धन्यवाद करते हुए कहा कि 1967 से यह एसोसिएशन कृषि विश्वविद्यालयों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है जहां विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में कृषि से जुड़ी समस्याओं पर मंथन करने के साथ-साथ कृषि शिक्षा में बदलती जरूरतों के हिसाब से अपने आप को इस तरह तैयार करते हैं ताकि वे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

उन्होंने कहा कि कृषि में नए आयाम के तहत स्मार्ट एवं डिजिटल कृषि, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल कृषि, फसल विविधीकरण, दलहन, तिलहन और मोटे अनाज तथा कृषि उद्योग एवं मूल्य संवर्धन को प्राथमिकता देनी होगी। भविष्य में कृषि के योगदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किसानों को उद्यमिता के लिए प्रेरित करने की दिशा में एकजुट होकर काम करना होगा।

कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच का संचालन डॉ. जयंती टोकस ने किया। इस अवसर पर हकृवि के कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।